## वर्चुअल करेंसी

वर्चुअल करेंसी विनिमय का एक साधन है, जो कुछ परिवेश में मुद्रा की तरह प्रचालित होता है, लेकिन इसमें वास्तविक मुद्रा के सभी गुण मौजूद नहीं होते हैं. यह अविनियमित, डिजिटल प्रकार की राशि है, जो इसके विकासकर्त्ता द्वारा जारी और सामान्यतया नियंत्रित किया जाता है और एक विशिष्ट वास्तविक समुदाय के सदस्यों के बीच प्रयुक्त और स्वीकृत होता है तथा यह विनिमय की डिजिटल इकाई है, जिसे सरकार द्वारा जारी कानूनी अर्पण का समर्थन नहीं होता है. वर्चुअल करेंसी पूरी तरह वास्तविक अर्थव्यवस्था में प्रयुक्त की जा सकती है या वास्तविक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद हेतु सरकार द्वारा जारी मुद्रा के बदले प्रयुक्त की जा सकती है. यह किसी केन्द्रीय बैंक द्वारा जारी या गारंटीयुक्त नहीं अविनियमित डिजिटल राशि है, जो भुगतान के साधन के रूप में काम कर सकता है. वर्चुअल करेंसी का अर्थ वास्तविक दुनिया में प्रयुक्त विनिमय की इकाई है. मूलतः खेल सर्जकों द्वारा खेल में प्रयोग हेतु वास्तविक दुनिया के प्रयोगकर्त्ताओं को प्रदत्त इन मुद्राओं का ऑफलाइन मजबूत बाजार विकसित हो चुका है.

ऑनलाइन कम्प्यूटर खेल परिवेशों और सामाजिक नेटवर्कों के भीतर मुद्राओं के रूप में शुरू होकर और ''ऑफलाइन'' या ''वास्तविक जीवन'' में भुगतान के साधन के रूप में विकसित होकर वर्चुअल करेंसी अनेक रूपों में आई हैं. अब खुदरा विक्रेताओं, रेस्टोरेंटों और मनोरंजन स्थलों को वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान के साधन के रूप में वर्चुअल करेंसी का प्रयोग अधिक संभव हो गया है. इन लेन-देनों में प्रायः कोई शुल्क या प्रभार खर्च नहीं होता है और बैंक शामिल नहीं होता है. हाल ही में वर्चुअल करेंसी ''बिटक्वाइन'' ने विकेंद्रीकृत, अभिजात से अभिजात वर्चुअल करेंसियों की नई पीढ़ी के लिए दृश्य सेट कर दिया है, जिसे क्रिप्टाकरेंसी भी कहा जाता है. वर्चुअल करेंसी परंपरागत मुद्रा का प्रयोग करके एक विनिमय प्लेटफार्म पर खरीदी जा सकती हैं. तब उन्हें ''डिजिटल वैलेट'' नामक व्यक्तिगत खाते में स्थानांतरित किए जाते हैं. इस वैलेट का प्रयोग करके उपभोक्ताएं किसी अन्य जो इन्हें स्वीकार करते हैं, को ऑनलाइन वर्चुअल करेंसी भेज सकते हैं या उन्हें पुनः परंपरागत औपचारिक मुद्रा (जैसे कि यूरो, पाउण्ड या डॉलर) में वापस परिवर्तित कर सकते हैं.

सेकेंड लाइफ के सर्जक लिंडेन लैब को वास्तविक दुनिया में पहली मुद्रा प्रणाली के सृजन का गौरव प्राप्त है. सेकेंड लाईफकी वास्तविक अर्थव्यवस्था का आधार ''लिंडेन डॉलर'' या ''एल S'' है. प्रयोक्ता लिंडेन लैब द्वारा प्रचालित ''लिंडेक्स'' या ''लिंडेन एक्सचेंज'' पर लिंडेन डॉलरों की खरीद और बिक्री कर सकते हैं. सितम्बर, 2009 में लिंडेक्स पर विनिमय दर प्रत्येक यू. एस. डॉलर के लिए लगभग 270 लिंडन डॉलर है. प्रयोक्ता लिंडेक्स पर लिंडेन डॉलर बेच सकते हैं और अपने पेपैल खाते में यू. एस. डॉलर में बिक्री प्राप्ति को नगदीकृत कर सकते हैं. लिंडेन लैब लिंडेक्स की निगरानी और प्रबंधन करता है ताकि यह स्थिर रहे और धोखाधड़ी के विरुद्ध या रूपए के गैरकानूनी प्रेषण के विरुद्ध उपायों को कार्यान्वित किया है.

व्यवसाय के आयोजन के लिए इस ढांचे को देखते हुए, ''वास्तविक व्यवसाय और विपणन के लिए अवसरों का पता लगाने के लिए सेकेंड लाइफ अनेक वास्तविक कंपनियों के लिए प्रारंभ करने का आधार रहा है.'' अनेक प्रयोक्ताओं ने वास्तविक वस्तुएं जैसे कि आवरण और सहायक वस्तुओं के सृजन, विज्ञापन और बिक्री द्वारा और मनोरंजन स्थलों के प्रचालन द्वारा तथा प्रमुख व्यवसायों और विश्वविद्यालयों को आलेख लेखन और सर्जक सेवाओं की पेशकश द्वारा रुपए अर्जित करने के लिए सेकेंड लाइफ का उपयोग भी किया है. इस मॉडल को विभिन्न तरह से अन्य वास्तविक क्षेत्रों में दुहराया गया है.

वैश्विक रूप से मान्यताप्राप्त वर्चुअल या डिजिटल मुद्रा की संभावना ने 2013 में अपनी मजबूती दर्शायी है क्योंकि 2008 के वित्तीय संकट के पीछे विकसित गुप्त रूप से सुरक्षित मौद्रिक इकाई (या गुप्त-मुद्रा) ने लोकप्रियता और मूल्य अर्जित कर लिया है और मुख्यधारा के वित्तीय लेन-देन में अतिक्रमण करना शुरू कर दिया है.

अपने मूल रूप में वर्चुअल करेंसी विकेन्द्रीकृत ''डिजिटल रोकड़'' है, जिसे भुगतान नेटवर्क और इंटरनेट के सहज खाते की एक इकाई दोनों के रूप में निरूपित किया गया था और यह व्यक्ति से व्यक्ति सौदा है, जिसे सुकर बनाने के लिए किसी बैंक या राशि ट्रांसमीटर की आवश्यकता नहीं है. इसका अर्थ है ये अप्रत्यावर्ती, बहुत ही तीव्र हैं और इसकी लागत निम्न या नहीं होती है. तथापि नकदी अंतरण में प्रक्रिया के विपरीत व्यक्ति को राशि के अंतरण के लिए किसी व्यक्ति के बगल में खड़े होने की आवश्यकता नहीं होती है. प्रयोक्ता अपने कम्प्यूटर या मोबाइल उपकरण पर निःशुल्क खुला स्रोत ''वैलेट'' संस्थापित करते हैं, जो एक प्रक्रिया है, जो उसे इंटरनेट से जुड़े किसी व्यक्ति को राशि भेजने और उससे राशि प्राप्त करने की अनुमति देता है.

रुपए के एक रूप के रूप में वर्चुअल करेंसी एक नई अवधारणा है. 2013 में दुनिया भर की सरकारों ने इसे कैसे अच्छी तरह विनियमित किया जाए या नहीं और डिजिटल मुद्रा का प्रयोग करके किए गए लेन-देन पर कर लगाया जा सकता है या नहीं, इसे समझने के लिए प्रौद्योगिकी का गंभीरता से परीक्षण शुरू कर दिया है. इस तरह का विनिमय विशेष रूप से कठिन है, क्योंकि ये किसी कंपनी द्वारा प्रचालित नहीं होते हैं या किसी वास्तविक स्थान पर इसका कार्यालय नहीं है. परिणामस्वरूप, प्रयोक्ता सरकारी निर्णयों एवं कार्रवाईयों से प्रभावित हो सकते हैं, लेकिन प्रोटोकॉल स्वयं नहीं. इस तरह यह सरकार द्वारा जारी सख्त मुद्रा के लिए इस तरह गैर राजनीतिक प्रतिस्पर्धा प्रस्तुत करता है, जो पहले कभी नहीं देखा गया. इसका परिणाम कैसे सामाजिक कार्यक्रमों को वित्तपोषित किया जा सकता है, का पुनः आविष्कार या राष्ट्रीय मुद्राओं के मूल्य की बेहतर सुरक्षा के उद्देश्य से उस प्रतिस्पर्धा पर प्रतिबंध लगाने के लिए सरकारी स्थापनाओं द्वारा प्रयास हो सकता है.

भारतीय रिजर्व बैंक ने प्रयोक्ताओं को सावधान किया है और पर्याप्त वित्तीय, प्रचालनात्मक, कानूनी, ग्राहक सुरक्षा और सुरक्षा संबंधी खतरे, जो उसके द्वारा भी प्रकट होते हैं, के बारे में बिटक्वाईस सहित वर्चुअल करेंसी (वी सी) के धारकों एवं व्यापारियों के लिए विभिन्न जोखिम तथ्यों को अधिसूचित किया है.

भारतीय रिजर्व बैंक ने यह उल्लेख किया है कि वह कुछ इलेक्ट्रॉनिक रिकार्ड, जिसे ''विकेन्द्रीकृत डिजिटल मुद्रा'' या ''वर्चुअल करेंसी'' (वी सी) जैसे कि बिटक्वाईस, लिटक्वाईस, बीबीक्यू क्वाईस, डोगे क्वाईस आदि होने का दावा किया गया है, से संबंधित विकासों, देश में उनके प्रयोग या व्यापार और इस संबंध में विभिन्न मीडिया रिपोर्टों की जांच करता आ रहा है.

भुगतान के लिए माध्यम के रूप में बिटक्वाईस सहित वी सी के सृजन, व्यापार या प्रयोग को किसी केन्द्रीय बैंक या मौद्रिक प्राधिकरण द्वारा प्राधिकृत नहीं किया गया है. ऐसे कार्य के लिए संबंधित स्थापनाओं द्वारा कोई विनियामक अनुमोदन, पंजीकरण या प्राधिकरण प्राप्त नहीं किया गया है. इस तरह ये उनके प्रयोक्ताओं के लिए अनेक खतरे पैदा करते हैं.

डिजिटल रूप में होने के कारण वी सी को डिजिटल/इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भंडारित किया जाता है, जिसे इलेक्ट्रॉनिक वैलेट कहा जाता है. अतः यह हैकिंग, पासवर्ड के खोने, पहुंच प्रत्यायक का समझौता, मालवेयर आक्रमण आदि से उत्पन्न हानि से ग्रस्त है. चूंकि इन्हें किसी प्राधिकृत केन्द्रीय रजिस्ट्री या एजेंसी के जरिए सृजित या विपणित नहीं किया जाता है, ई-वैलेट की हानि का परिणाम उसमें धारित वी सी की स्थायी हानि हो सकती है.

वी सी जैसे कि बिटक्वाईस द्वारा भुगतान प्राधिकृत केन्द्रीय एजेंसी, जो ऐसे भुगतान को विनियमित करता है, के बिना अभिजात से अभिजात आधार पर किया जाता है. अतः ग्राहक समस्याओं/विवादों/प्रभार वापसी आदि के उपाय के लिए कोई स्थापित ढांचा नहीं है.

वी सी के लिए किसी परिसंपत्ति का निर्धारण या समर्थन प्राप्त नहीं है. अतः उनका मूल्य अनुमान का विषय प्रतीत होता है. पिछले दिनों वी सी के मूल्य में पर्याप्त परिवर्तनशीलता देखी गई है. अतः प्रयोक्ता को मूल्य में ऐसी परिवर्तनशीलता के कारण पर्याप्त हानि होने का खतरा है.

यह सूचना मिली है कि वी सी जैसे कि बिटक्वाईस विभिन्न क्षेत्राधिकारों में गठित विनिमय प्लेटफार्मों पर विपणित किए जाते हैं, जिनकी कानूनी स्थिति भी अस्पष्ट है. अतः ऐसे प्लेटफार्मों पर वी सी के व्यापारियों को कानूनी और वित्तीय जोखिमों का खतरा रहता है.

भारतीय स्टेट बैंक ने यह भी कहा है कि वर्तमान में यह विदेशी विनिमय और भुगतान प्रणाली कानूनों एवं विनियमों सहित देश के मौजूदा कानूनी और विनियामक ढांचा के अंतर्गत वी सी के प्रयोग, धारण और व्यापार से जुड़े मुद्दों का परीक्षण कर रहा है.

**(विभिन्न एजेंसियों से साभार)**